परिचय

संत जेवियर्स कॉलेज, सिमडेगा

www.sxcsim.ac.in

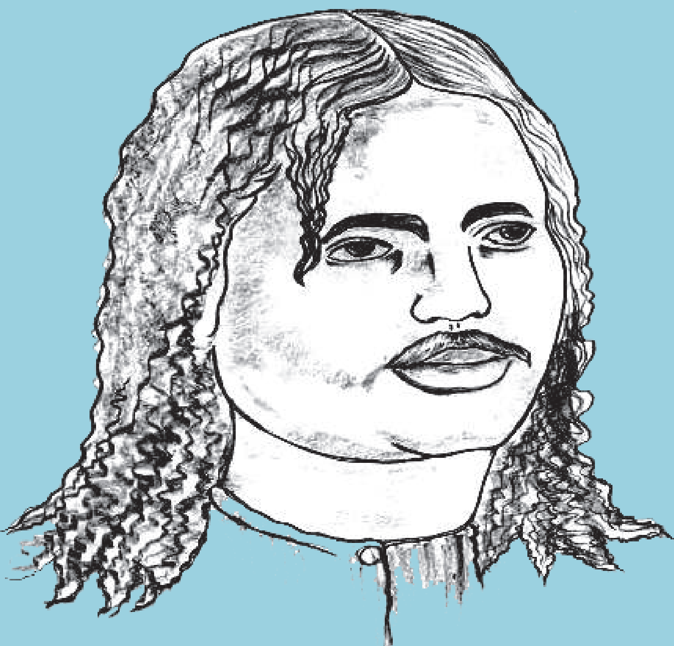

संपादक मंडल

मुख्य संपादक

सीमा खेस्स

उप – संपादक

निशी तिर्की

प्रतिमा परधिया

शशि ज्योति बखला

टंकक

सन्नी बसन्त किन्डो

''शिक्षा केवल ज्ञान नहीं, व्यक्तित्व से परिचय भी है।''

अपनी रचनाएँ, प्रोत्साहन और प्रतिक्रया भेजने के लिए निम्न पत्ते पर संपर्क करें : –
संत जेवियर्स कॉलेज, सिमडेगा, पोस्ट – गोतरा, थाना – सिमडेगा, जिला – सिमडेगा, पिन – 835235 (झारखण्ड)
संपर्क – 8210865183, 7654227047

परिचय

हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

अक्टूबर – दिसंबर 2025 **अंक – 1**

मुख्य संपादक सीमा खेस्स, सहायक प्राध्यापक

उप–संपादक प्रतिमा परधिया, सहायक प्राध्यापक
शशि ज्योति बखला, सहायक प्राध्यापक
निशी तिर्की, सहायक प्राध्यापक

संपादक मण्डल (विद्यार्थी गण)

1. अंजली इन्दवार (हिन्दी, सेमेस्टर – 3)
2. प्रिया मांझी (हिन्दी, सेमेस्टर – 3)
3. आसमा डुँगडुँग (हिन्दी, एम. ए. सेमेस्टर – 2)
4. शेखर डुँगडुँग (हिन्दी, एम. ए. सेमेस्टर – 2)

संरक्षक डॉ फा. रोशन बाः ये. स.
डॉ. फा. समीर जेवियर भौंरा, ये. स.

टंकक सन्नी बसन्त किन्डो (लाइब्रेरी)

रेखाचित्र अभिजीत किड़ो (हिन्दी, सेमेस्टर – 2)

इस अंक में –

1. **प्रधानाचार्य का संदेश**
2. **उप – प्राचार्य का संदेश**
3. **संपादकीय**
4. **विद्यार्थी लेख :**
   I. आधुनिक शिक्षा प्रणाली और हमारा भविष्य
   नेहा बूढ़
   II. समाज पर सोशल मीडिया का प्रभाव
   सुचिता खाखा
   III. झारखण्ड के 25 वर्ष : सफलता और चुनौतियाँ
   जेन रोजलीन बारला
5. **कविताएँ :**
   I. मेहनत – *आस्मा डुँगडुँग*
   II. संकल्प – *उर्मिला कुमारी*
   III. नारी तू जंजीर को तोड़ – *प्रेरणा कुजूर*
   IV. झारखण्ड – *नेहा प्रधान*
6. **कहानियाँ :**
   I. आदिवासी पकवान – सुहावन मिंज
   II. जुए की लत – दीपा कुमारी
   III. घने जंगल की जड़ें – शेखर डुँगडुँग
   IV. बाबा मुझे भी ले चलो – अनुपा मिंज
   V. आपके दादा – दादी के घर पर अलौकिक घटनाएँ
   घटित होने लगती हैं – सुस्मिता खेस्स
7. **चुटकुले :**

संदेश

डॉ. रोशन बाः
प्राचार्य

दुनिया वीरान नहीं अपितु विरासत है जहाँ हर प्राणी प्रकृति की खुशबू को महसूस करता है। प्रकृति जीवन को समेटकर टूटे जीवन से जोड़ती है और जख्म को ठीक करती है। "परिचय" एक लघु हिन्दी पत्रिका है यह पत्रिका समाज के जीवन गाथा को प्रकट करती है। इसमें शिक्षकों व विद्यार्थियों के जीवन अनुभवों को शब्दों में प्रकट करने का प्रयास किया गया है। पहनावा, खान–पान, पर्व–त्योहार और संस्कृति को व्यक्ति अपने जीवन के हर लम्हों में अनुभव करता है। हमारा कर्तव्य है कि हम अपने जीवन यात्रा में जीवन के हर पदचिन्ह, जो अनुभव से जुड़ा है उससे सीखने का प्रयास करें। पैरों के निशान हमें चुनौती देती है कि हम उनसे सीखें जो हमारे अपने है अन्यथा दुनिया में इतने आँधी–तूफान हैं कि सिर्फ पैरों के निशान ही नहीं अपितु जीवन को मिटने में भी समय नहीं लगता है। जीवन यापन से हमें आनन्द मिलता है अगर हमारा दैनिक जीवन संस्कृत्ति एवं परम्परा से जुड़ा हो।

आज मनुष्य के पास सबकुछ है फिर भी अकेला महसूस करता है। अपनों के साथ रह कर भी व्यक्ति वीरान सा जीवन व्यतीत करता है। यह इसलिए होता है क्योंकि मनुष्य अपना परिचय ही भूल गया है। अपना "परिचय" कलमों द्वारा अपनी खूबी को विद्यार्थियों के विभिन्न

रूपों में सजाने का प्रयास किया है। यह प्रयास उन्हें अपने विचारों को प्रकट करने एवं आत्म–मंथन करने का एक सुनहरा मौका देता है और इससे विद्यार्थी अपने सदगुणों सहित सर्वांगीण विकास कर पाता है। इस प्रयास से सभी पाठकों के लिए यह पत्रिका प्रेरणास्रोत होगा और सभी लेखक–लेखिकाओं को प्रोत्साहन मिलेगा। "परिचय" के सभी प्रतिभागियों एवं संपादक मंडल को ढेर सारी बधाई एवं शुभकामनाएँ।

संदेश

डॉ. समीर जेवियर भौंरा
उप – प्राचार्य

आदरणीय पाठकों,

नमस्कार!

मुझे इस पत्रिका के लिए एक संदेश लिखते हुए खुशी हो रही है। यह दर्शाता है कि स्मार्टफोन और एआई उपकरणों के युग में छात्रों के बीच पुस्तकों और पत्रिकाओं का कितना महत्व है। लेखन और प्रकाशन को हमेशा से नेतृत्व का एक प्रभावी साधन माना गया है – चाहे वह व्यवसाय, कला, शिक्षा, मनोरंजन या किसी भी अन्य क्षेत्र में हो। लेखन और प्रकाशन बौद्धिक नेतृत्व का एक महत्वपूर्ण साधान है क्योंकि यह सतही ज्ञान से परे है। गहन ज्ञान और समझ, आलोचनात्मक सोच और निर्णय लेने के लिए लेखन और प्रकाशन महत्वपूर्ण है। लेखन और प्रकाशन का पाठकों के मन पर भी सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है।

मुझे बहुत खुशी है कि सिमडेगा संत जेवियर्स कॉलेज के छात्रों ने पत्रिका प्रकाशित करने का एक सशक्त प्रयास किया है।निश्चित रूप से, इससे उन्हें सशक्तता मिलेगी; उन्हे अपने जीवन में आत्मविश्वास मिलेगा। पत्रिका में विविध विषयों पर लेख हैं। पाठक प्रत्येक लेख को पर्याप्त समय देकर खुशी से पढ़ेगे।

अंत में, मैं इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी पाठकों, लेखकों, प्रकाशकों और शुभचिंतकों को बधाई देता हूँ। संपादकों, शिक्षकों और छात्रों, सभी को विशेष बधाई, जिन्होंने इस प्रकाशन को संभव बनाया।

संपादकीय

सीमा खेस्स
सहायक प्राध्यापक

'परिचय' पत्रिका केवल कुछ पृष्टों का संग्रह नहीं, बल्कि यह हमारे विचारों, भावनाओं और सपनों का सुदंर दस्तावेज है। यह हमारे सामूहिक प्रयासों का प्रतीक है, जो यह दर्शाता है कि जब हम एक उद्देश्य के साथ एकजुट होते हैं, तो कोई भी कार्य असंभव नहीं रहता।

इस पत्रिका के माध्यम से हमने प्रयास किया है कि हमारे संस्थान की विविध गतिविधियों, और रचनात्मक अभिव्यक्तियों को एक साथ प्रस्तुत किया जाए। इसमें हमारे विद्यार्थियों की प्रतिभा, मार्गदर्शकों का मार्गदर्शन और प्रबंधन का सहयोग और समन्वय झलकता है।

आज के प्रतिस्पर्धी युग में केवल पुस्तकीय ज्ञान पर्याप्त नहीं हैं। हमें अपनी रचनात्मकता, अभिव्यक्ति और विचारशीलता को भी विकसित करना होता है। यह पत्रिका उसी दिशा में एक छोटा – सा सार्थक प्रयास है। इसमें शैक्षणिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और साहित्यिक पहलुओं को स्थान दिया गया है, ताकि प्रत्येक पाठक हमारे परिवार के हर सदस्य की विविध पहचान से परिचित हो सके।

संपादन कार्य सदैव चुनौतीपूर्ण किन्तु सुखद अनुभव होता है। विभिन्न लेखों, कविताओं, कहानियों और विचारों को एक सूत्र में बाँधना एक

रचनात्मक यात्रा है। इस यात्रा में जिन शिक्षकों विद्यार्थियों और सहयोगियों ने अपना समय, परिश्रम और सुझाव दिए, उनके प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ।

आशा है कि यह पत्रिका न केवल हमारे महाविद्यालय की पहचान बनेगी, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी सिद्ध होगी। आपके मूल्यवान सुझाव प्रतिक्रियाएँ हमारे भविष्य के प्रयासों को और अधिक सार्थक दिशा प्रदान करेगी।

विद्यार्थी लेख

आधुनिक शिक्षा प्रणाली और हमारा भविष्य

नेहा बूढ़ (एम.ए.)
हिन्दी विभाग

शिक्षा वह दीपक है जो अंधकार को मिटा कर जीवन में प्रकाश लाता है यह केवल ज्ञान का साधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार है। शिक्षा हमें सोचने समझने और सही निर्णय लेने की शक्ति देती है समय के साथ जब समाज में, तकनीक और आवश्यकताएँ बदली, तो शिक्षा की रूपरेखा भी बदली। आज हम जिस युग में जी रहे हैं, वह आधुनिकता और विज्ञान का युग है। इसलिए हमारी शिक्षा प्रणाली भी आधुनिक रूप में परिवर्तित हो चुकी है –जहाँ किताबों से आगे बढ़ कर अब ज्ञान का संसार मोबाइल, कंप्यूटर और इंटरनेट में समाया है ।

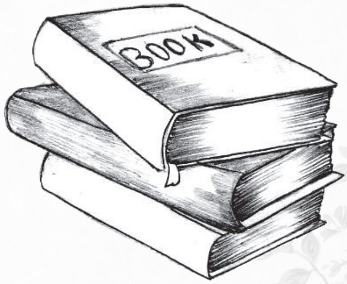

यदि हम पीछे मुड़कर देखें तो पाएंगे कि शिक्षा की यात्रा बहुत लंबी रही है। प्राचीन भारत में गुरुकुलों की परंपरा थी, जहां शिक्षार्थी प्राकृतिक वातावरण में गुरु के सानिध्य में ज्ञान प्राप्त करते थे, वहाँ केवल विषयों का अध्ययन नहीं, बल्कि जीवन – मूल्यों, अनुशासन और आत्मनिर्भरता का भी प्रशिक्षण मिलता था। समय बदला, शासन व्यवस्था बदली और शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन आया। ब्रिटिश शासन के दौरान शिक्षा अधिक औपचारिक और परीक्षा – केंद्रित हो गई। स्वतंत्र भारत में जब नई नीतियां बनी तो शिक्षा को समाज और राष्ट्र निर्माण से जोड़ा

गया। आज, नई शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को एक नया आयाम दिया है – जहां तकनीकी ज्ञान, कौशल विकास और सृजनशीलता को समान महत्व दिया जा रहा है ।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में आज केवल पाठ्य–पुस्तकें ही नहीं, बल्कि डिजिटल माध्यम स्मार्ट क्लास, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और प्रोजेक्टर आधारित अध्ययन शामिल हैं। अब शिक्षा केवल ज्ञान देने वाला नहीं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया में मार्गदर्शन बन गया है। विद्यार्थी स्वयं खोजते हैं, प्रयोग करते हैं और अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। विषयों की सीमाएं भी अब टूट रही है– विज्ञान के विद्यार्थी साहित्य पढ़ सकते हैं और कला के विद्यार्थी तकनीकी ज्ञान ले सकते हैं। यह लचीलापन विद्यार्थियों की प्रतिभा को विस्तार देता है। आज शिक्षा का केंद्र केवल 'क्या पढ़ना है' नहीं, बल्कि 'कैसे सीखना है' बन गया है। रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रम इंटर्नशिप और कौशल विकास कार्यक्रमों में शिक्षा को जीवन से जोड़ दिया है।अब विद्यार्थी केवल नौकरी खोजने के बजाय स्वयं रोजगार सृजन की दिशा में सोच रहे हैं ।

21वीं सदी को तकनीकी का युग कहा जाता है। आज हर विद्यार्थी के हाथ में एक स्मार्टफोन है,जो उसे ज्ञान की अनंत दुनिया से जोड़ देता है। ऑनलाइन कक्षाएं, डिजिटल पुस्तकालय, वर्चुअल प्रयोगशालाएं और ई – लर्निंग प्लेटफॉर्म ने शिक्षा को सीमाओं से मुक्त कर दिया है।कॉविड–19 महामारी के दौरान जब विद्यालय और महाविद्यालय बंद थे, तब यही ऑनलाइन शिक्षा एक नई आशा बनकर उभरी। इसने सिद्ध कर दिया कि सीखना किसी भवन का मोहताज नहीं, बल्कि इच्छा और प्रयास का परिणाम है। जहां आधुनिक शिक्षा ने नए द्वार खोले हैं, वहीं इसके साथ कुछ चिंताएं भी जुड़ी है। तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता ने विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन से थोड़ा दूर कर दिया है। कई बार ज्ञान की गहराई के बजाय केवल सूचना का अम्बार इकट्ठा हो जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों

में संसाधनों की कमी के कारण डिजिटल शिक्षा का लाभ सभी तक नहीं पहुंच पा रहा है। इसके साथ ही नैतिकता और मानवीय मूल्यों में कमी की समस्या भी देखी जा रही है। आज की शिक्षा अधिकतर अंक और प्रमाण पत्रों की होड़ में उलझ गई है, जबकि वास्तविक उद्देश्य होना चाहिए – व्यक्ति को मानवता, सहिष्णुता और जिम्मेदारी का भाव देना।

हमारा भविष्य इस मिट्टी में पनपेगा, जिस मिट्टी में हमारी शिक्षा की जड़ें गहराई तक जाएँगी। आधुनिक शिक्षा ने युवाओं को नए सपने और नई दिशाएँ दी हैं। अब भारत में युवा वैज्ञानिक, तकनीकी विशेषज्ञ,कलाकार और उद्यमी सभी क्षेत्रों में विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना रहा है।यह परिवर्तन शिक्षा की नई सोच का परिणाम है जहाँ ज्ञान के साथ–साथ आत्मविश्वास और नवाचार की भावना भी पनप रही है।

यदि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं,बल्कि राष्ट्र निर्माण और मानवीय उत्थान हो,तो निश्चित रूप से हमारा भविष्य उज्ज्वल होगा। एक शिक्षित समाज ही मजबूत लोकतंत्र की नींव होता है,और शिक्षा ही वह माध्यम है जो हमें अंधविश्वास, भेदभाव और असमानता से मुक्त कर सकती है ।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली हमारे समाज के विकास का दर्पण है।यह हमें न केवल ज्ञान देती है, बल्कि सोचने, निर्णय लेने और सही मार्ग चुनने की क्षमता भी प्रदान करती है। परन्तु यह याद रखना आवश्यक है कि शिक्षा का असली उद्देश्य मानव को मानव बनाना है। यदि तकनीकी प्रगति के साथ हम नैतिक मूल्यों और संवेदनाओं को भी बनाए रखें,तो आधुनिक शिक्षा प्रणाली हमें न केवल समृद्ध, बल्कि सजग और संवेदनशील नागरिक भी बनाएगी।

इसी भावना के साथ कहा जा सकता है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली ही हमारे स्वर्णिम भविष्य की आधारशिला है जहाँ ज्ञान, विज्ञान और संस्कार एक साथ चलकर समाज को नई दिशा देंगे।

समाज पर सोशल मीडिया का प्रभाव

सुचिता खाखा (एम. ए.)
हिन्दी विभाग

वर्तमान युग को सूचना और तकनीक का युग कहा जाता है। इस युग में सोशल मीडिया समाज के हर वर्ग को जोड़ने वाला सबसे प्रभावशाली माध्यम बन चुका है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर, व्हाट्सएप, यूट्यूब, टेलीग्राम जैसे मंचों ने मानव जीवन की शैली विचारधारा, संवाद प्रणाली और सामाजिक संबंधों की परिभाषा ही बदल दी है। आज व्यक्ति अपने विचार भावनाएं और सूचनाएँ एक क्लिक में विश्व तक पहुंचा सकता है परंतु जहाँ सोशल मीडिया ने अनेक सुविधाएं प्रदान की हैं वहीं इसके नकारात्मक प्रभाव भी समाज पर स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

सोशल मीडिया इंटरनेट आधारित ऐसा मंच है,जो उपयोगकर्त्ताओं को आपसी संवाद, विचार –विनिमय, जानकारी साझा करने और नेटवर्क निर्माण की सुविधा प्रदान करता है। 2000 के दशक की शुरुआत में नेटवर्किंग वेबसाइट ऑर्कुट', मायस्पेस' और 'फेसबुक' जैसे प्लेटफॉर्म के आगमन से इसकी शुरुआत हुई। धीरे – धीरे तकनीकी प्रगति के साथ सोशल मीडिया का विस्तार मोबाइल एप्लीकेशन, लाइव वीडियो, डिजिटल मार्केटिंग और ई – शिक्षा

तक हो गया। आज सोशल मीडिया न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि राजनीति, शिक्षा, पत्रकारिता, व्यवसाय और सामाजिक आन्दोलनों का भी महत्वपूर्ण उपकरण बन गया है।

सकारात्मक प्रभाव

सोशल मीडिया ने सूचना के आदान–प्रदान में क्रांति ला दी है। कोई भी समाचार, विचार या घटना कुछ ही क्षणों में लाखों लोगों तक पहुंच जाती है। प्राकृतिक आपदाओं, स्वास्थ्य अभियानों और जनहितकारी योजनाओं के प्रचार प्रसार में इसकी भूमिका अत्यंत उपयोगी रही है। कोविड – 19 महामारी के दौरान सोशल मीडिया ने जनजागरुकता और सहयोग की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सोशल मीडिया ने आम नागरिक को अभिव्यक्ति का मंच दिया है पहले जब विचार व्यक्त करने के लिए पारंपरिक मीडिया पर निर्भर रहना पड़ता था, वही अब व्यक्ति स्वयं अपनी बात रख सकता है इससे लोकतांत्रिक मूल्यों को बल मिला है। यूट्यूब, गूगल और टेलीग्राम जैसे प्लेटफार्म ने शिक्षा को नया आयाम दिया है। विद्यार्थी अब विश्व के किसी भी कोने से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही पर्यावरण,स्वास्थ्य और सामाजिक मुद्दों पर चलने वाले अभियानों से जागरूकता भी बढ़ी है।

सोशल मीडिया ने डिजिटल मार्केटिंग, कंटेंट क्रिएशन, ऑनलाइन व्यापार जैसे नए व्यावसायिक अवसर प्रदान किए हैं। छोटे व्यापारी भी अब वैश्विक बाजार तक पहुंच सकते हैं। सोशल मीडिया ने विश्व को 'वैश्विक' गाँव में बदल दिया है। विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और समुदाय के लोग अब एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इससे अंतरराष्ट्रीय सहयोग और सांस्कृतिक समझ बढ़ी है।

नकारात्मक प्रभाव

सोशल मीडिया पर फैली गलत सूचनाएँ और अफवाहें समाज में भ्रम, नफरत और असंतोष फैलाती हैं। राजनीतिक, धार्मिक और

सामाजिक विवादों को बढ़ाने में इसका बड़ा योगदान रहा है, उपयोगकर्ताओं की निजी जानकारियाँ, फोटो और डेटा का दुरुपयोग बढ़ गया है। साइबर अपराध हैकिंग, ठगी और ब्लैकमेलिंग जैसी घटनाएँ सामान्य होती जा रही हैं। सोशल मीडिया की लत आज युवाओं के लिए बड़ी समस्या बन चुकी है। लगातार स्क्रीन पर बने रहने से तनाव, चिन्ता, अवसाद और आत्मसम्मान में कमी जैसी समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं।

सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग अपमानजनक भाषा और अश्लील सामग्री ने समाज की नैतिक सीमाओं को कमजोर किया है। युवा पीढ़ी में संवेदनशीलता और जिम्मेदारी की भावना घटती जा रही है। आज सोशल मीडिया का उपयोग राजनीतिक प्रचार के लिए होने लगा है। इससे समाज में वैचारिक विभाजन और असहिष्णुता बढ़ी है।

युवा वर्ग सोशल मीडिया का सबसे बड़ा उपभोक्ता है। इससे उन्हें शिक्षा,रोजगार और अभिव्यक्ति के अवसर मिलते हैं, परंतु यही वर्ग सबसे अधिक प्रभावित भी होता है। लाइक्स और फॉलोअर्स की होड़ में युवा जीवन मूल्य खो बैठते है। आत्मसंतोष के स्थान पर तुलना और ईर्ष्या बढ़ जाती है। अतः आवश्यक है कि युवा सोशल मीडिया का उपयोग सकारात्मक दिशा में करें – ज्ञानार्जन, सृजन और समाजसेवा के लिए, न कि मनोरंजन या दिखावे के लिए। सोशल मीडिया ने परिवार के भीतर संवाद के स्वरूप को भी बदल दिया है। पहले जहाँ परिवार के सदस्य प्रत्यक्ष संवाद करते थे, वही अब मोबाइल स्क्रीन ने संवाद को आभासी बना दिया है। भावनात्मक निकटता कम होती जा रही है। इसके बावजूद विदेशों में बसे परिजनों या मित्रों से सम्पर्क बनाएं रखने में सोशल मीडिया ने बड़ी सुविधा प्रदान की है।

सोशल मीडिया समाज का दर्पण भी है और दिशा – निर्देशक भी। यह एक ऐसा उपकरण है, जो समाज को प्रगति, जागरुकता

और एकता की ओर भी ले जा सकता है और अव्यवस्था, भ्रम तथा विभाजन की ओर भी। सब कुछ इस पर निर्भर करता है कि इसका उपयोग कैसे किया जा रहा है। यदि हम सोशल मीडिया का शिक्षा, रचनात्मकता, सहयोग और सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम बनाएँ, तो यह समाज को और अधिक उन्नत बना सकता है, लेकिन यदि इसका उपयोग झूठ, घृणा और स्वार्थ के लिए किया जाए, तो यह सामाजिक विघटन का कारण बन सकता है।

अतः आवश्यक है कि हम तकनीक के साथ – साथ अपने नैतिक मूल्यों और विवेक को भी बनाए रखें। तभी सोशल मीडिया का प्रभाव समाज के लिए वरदान सिद्ध होगा, अभिशाप नहीं।

झारखण्ड के 25 वर्ष : सफलता और चुनौतियाँ

जेन रोजलीन बारला (बी.ए.)
अर्थशास्त्र विभाग

15 नवम्बर 2000 ई को बिरसा मुंडा जयंती के अवसर पर भारत के 28वें गणराज्य के रूप में 'झारखंड' का उदय हुआ। 'झार' का अर्थ है –झाड़ी और खंड का अर्थ है –स्थान। अर्थात झारखंड शब्द का अर्थ है –झाड़ियों से घिरा हुआ स्थान। यह नया राज्य बिहार के छोटानागपुर और संथाल परगना को मिलाकर बनाया गया। झारखंड राज्य की सीमाएं बिहार, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश आदि को छूती है। झारखंड का कुल क्षेत्रफल 79,714 वर्ग किलोमीटर है। 2011 की जनगणना के अनुसार झारखंड राज्य की कुल आबादी लगभग 3,29,88,134 है। झारखंड की राजधानी रांची है। झारखंड की राजकीय भाषा हिंदी है लेकिन हिंदी के साथ–साथ कई स्थानीय भाषा भी बोली जाती है जिनमें संथाली, मुंडारी, हो, कुरुख, खड़िया, खोरठा, कुरमाली और नागपुरी आदि शामिल है। झारखंड का राजकीय पुष्प 'पलाश' है जब पलाश के फूल खिलते हैं तो वनों में आग की तरह दिखाई देते हैं। वन, जंगल, झरनें झारखंड राज्य को अन्य राज्यों की तुलना में अधिक मूल्यवान एवं गौरवशाली बनने में अपना योगदान दिया है।यह राज्य भारत देश के विकास एवं प्राकृतिक रूप से एक अलग पहचान देने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

झारखंड राज्य की स्थापना के 25 वर्ष पूरा होने के अवसर पर राज्य में विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से हर्षोल्लास के साथ स्थापना दिवस मनाया गया। झारखंड राज्य में निवास करने वाले

लोग स्वयं को आदिवासी कहना पसंद करते हैं झारखंड राज्य को अपने भौगोलिक संरचना और प्राकृतिक संसाधनों के कारण एक अलग पहचान मिली है, लेकिन यही भौगोलिक संरचना एवं प्राकृतिक संसाधन ही इस राज्य के लिए अभिशाप बन गए हैं। औपनिवेशिक काल से ही झारखंड अनेक शासकों के लिए प्राकृतिक संसाधन प्राप्त करने का एक प्रमुख स्थान रहा है इससे राज्य का विकास काफी प्रभावित हुआ है साथ ही स्थानीय लोगों का शोषण अधिक हुआ है।

सफलता

झारखंड राज्य ने कई क्षेत्रों में विकास कार्य किया है जैसे औद्योगिक क्षेत्र, खेल, पर्यटन स्थल आदि। औद्योगिक क्षेत्र जिनमें धनबाद, जमशेदपुर, बोकारो, रांची आदि शामिल है।इन क्षेत्रों के विकास के लिए औद्योगिक विकास प्राधिकरण बनाए गए हैं। औद्योगिक क्षेत्र के द्वारा झारखंड की सकल राज्य घरेलू उत्पाद में योगदान दिया जाता है। इससे राज्य की अर्थव्यवस्था में आर्थिक विकास, प्रति व्यक्ति आय, रोजगार के अवसर बढ़ते हैं।झारखंड राज्य को खेल का क्षेत्र कहा जाता है।इसने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई खिलाड़ियों को दिया है जिनमें महेंद्र सिंह धोनी, माइकल किंडो, सलीमा टेटे, दीपिका कुमारी के अतिरिक्त अन्य खिलाड़ी भी शामिल है जिन्होंने झारखंड राज्य में रहकर कम संसाधनों के अभाव में रहते हुए भी खेल के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।झारखंड राज्य में अनेक पर्यटक स्थल है जिनमें नेतरहाट, हुंडरू, पारसनाथ, दशम फॉल आदि हैं। प्राकृतिक दृश्य का आनंद लेने के लिए लोग यहां दूर–दूर से आते हैं। झारखंड राज्य का प्राकृतिक दृश्य सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है।राज्य सरकार ने पर्यटक स्थल के विकास के लिए कई नीतियों का निर्माण किया है यहां अन्य राज्यों एवं विदेशो से भी पर्यटक आते हैं पर्यटकों से प्राप्त राजस्व भी राज्य की अर्थव्यवस्था में योगदान देती है। झारखंड राज्य भारत में एक अलग पहचान देने की भूमिका निभाई है।

चुनौतियां

झारखंड भारत का एक ऐसा राज्य है जो प्राकृतिक संसाधनों तथा खदानों से समृद्ध है, फिर भी झारखंड राज्य, देश में पिछड़े राज्यों की सूची में गिनती होती है। झारखंड राज्य अमीर है लेकिन यहां निवास करने वाले लोग गरीब हैं। झारखंड के विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं – गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, पलायन, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार आदि। इन सभी समस्याओं के कारण झारखंड का विकास अधूरा रह गया है। झारखंड मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर है। आज भी यहां की अधिकतर जनसंख्या कृषि पर आश्रित है। अशिक्षा और बेरोजगारी के कारण राज्य के निवासियों की स्थिति गंभीर है। राज्य सरकार शिक्षा पर व्यय नहीं करती है और लोगों में जागरूकता की कमी के कारण अशिक्षित है। उद्योगों में काम करने के लिए कुशल श्रमिकों की आवश्यकता होती है जहाँ कौशल की कमी के करणों को देखते हुए बाहरी लोग यहाँ आते हैं और राज्य की जनता बेरोजगार रह जाती है या उन्हें कम वेतन वाली नौकरियों में रखा जाता है। झारखंड की एक बड़ी चुनौती पलायन है। पलायन और नक्सली घटनाएं समाचार पत्रों में प्रतिदिन देखने को मिलती है। इससे विकास कार्य प्रभावित हो रहा है। भ्रष्टाचार के कई मामलों को भी समाचार पत्रों में उजागर किया जाता है। इसी से पता चलता है कि प्रशासनिक अधिकारी और राजनेताओं के कारण आज राज्य पिछड़ा है।

झारखंड एक समृद्ध एवं सुंदर राज्य है, यदि झारखंड में गरीबी, बेरोजगारी, पलायन, भ्रष्टाचार ,नक्सलवाद जैसी समस्याओं का समाधान किया जाए और शिक्षा, स्वास्थ्य, औद्योगिक क्षेत्र के विकास को प्राथमिकता दी जाए तो झारखंड का विकास होगा इन समस्याओं का समाधान होने पर झारखंड समृद्ध एवं संपन्न राज्यों की सूची में शामिल हो सकता है जिससे हम समृद्ध एवं सुखी झारखंड कह सकते हैं।

कविताएँ

मेहनत

आस्मा डुँगडुँग (एम. ए.)
हिन्दी विभाग

हर दिन का एक छोटा प्रयास ही
व्यक्ति को महान बनाता,
दिन भर की मेहनत या एक दिन की
मेहनत से कोई सफल नहीं होता।
कुछ क्षण कुछ समय
कुछ मिनट कुछ घंटों

के तालमेल से समय
बड़ा आकार लेता।

मेहनत ही एक ऐसी कड़ी है
जो व्यक्ति को ऊंचाई के शिखर
तक ले पहुंचाती है और,
प्रयास से ही आगे बढ़ता है।

मेहनत कभी भी बेकार नहीं जाती है
मेहनत जीवन के सफर में काम आती ही है,
परिश्रम करना मनुश्य का लक्ष्य होना चाहिए,
न कि बिना परिश्रम से कुछ पाना,
हर दिन का एक छोटा प्रयास ही
व्यक्ति को महान बनाता है ।

संकल्प

उर्मिला कुमारी (बी. ए.)
इतिहास विभाग

दृढ़ है संकल्प तो विकल्प,नहीं ढूँढना
निश्चय जब कर लिया संकल्प नहीं तोड़ना,

खुद पर विश्वास और मन में उमंग हो,
कौशल के साथ अगर साहस का संग हो,
तो किसी भी काम को, अधूरा नहीं छोड़ना
निश्चय जब कर लिया।

एक दिन रात के साथ सुबह आएगी,
अंधकार चीरकर प्रकाश साथ लाएगी
ठान लिया एक बार मुँह नहीं तू मोड़ना,
निश्चय जब कर लिया।

विचार को विचार कर,
दुश्ट को, दुलार कर,
एकबार थामकर हाथ नहीं छोड़ना
निश्चय जब कर लिया।

जीत के लिए तो संकल्प शुद्ध चाहिए,
आलस प्रमाद के विरुद्ध युद्ध चाहिए,
हारकर किसी से तू हाथ नहीं जोड़ना,
निश्चय जब कर लिया।

नारी तू जंजीर को तोड़

प्रेरणा कुजूर (एम. ए.)
हिन्दी विभाग

तू नारी है तू हारी नहीं, बस डरी – सी है,
देख कहां तू लाचार, बेबस, बेचारी – सी है ।
तू दर्द सहती और सहती ही जाती है,
मन की बात बस, मन में दबाए रह जाती है।
कब तक बैठे आंसू बहाए,
बस तू बिलखती है रह जाएगी,
जंजीर तोड़ तू उठ और चल,
जीत तुझे मिल जाएगी ।
जब दरिंदों की इस दुनिया में,
शेरनी बन दहाड़ेगी,
तब कानून की हथियार ले,
तू शक्तिशाली बन जाएगी ।
आसमान खुला है बस पंख पसार,
उड़ना तू सीख जाएगी,
अधिकार मिलेगा हिम्मत रख,
जब तू स्वयं डर को भगाएगी ।
ज्ञान ले और हक को जान,
तब अपने लिए कुछ कर पाएगी,
करेगा सम्मान ये सारा जहाँ,
जब तू आत्मनिर्भर बन जाएगी।

झारखण्ड

नेहा प्रधान (बी. ए.)
इतिहास विभाग

वन ने आँचल फैलाया है, हरियाली हर ओर है,
प्रकृति की छटा निराली , साँझ पहर और भोर है।

दूर – दूर तक घने जंगल में सुंदर सा है गाँव,
फल – फूल से लदे हुए हैं, पेड़ों की है छाँव।

नंगे पाँव चलते रहते फिर भी सबसे आगे है,
तन पे इनके वस्त्र नहीं है, खाने को भी लाले हैं।

वर्शा हो या जाड़ा हो, घूप में भी मुस्कान है,
काम करने का जज्बा दिल में मजदूरी ही षान है।

दुनिया के बहकावे की इनके दिल में चाह नहीं है,
हँसते गाते, आते जाते, घर तक इनकी राह नहीं है।

धर्म भरा है पग पग पर और कई जनजाति है,
प्रेम भरा है सबके दिल में इश्ट, मित्र और साथी हैं।

सरहुल, करम, होली, दीपावली, ईद, क्रिसमस पर्व है,
आपस में मिल जुलकर रहना, अपने राज्य का गर्व है।

रंग मिला जब राज्य का इसकी,
उपमा भी क्या सुन्दर है,
जंगल का दामन है इसका,
खनिज का बड़ा भण्डार है।

अभ्रक का संसार यहाँ है,
उत्पादक का भण्डार बड़ा है।
लौह अयस्क, कोयला बॉक्साइट,
यूरेनियम, लाह पड़ा है।

सिद्धू – कान्हू , बिरसा मुण्डा,
अंग्रेजों से जंग किये,
आजादी का ज्ञान बंटाया,
जयपाल ने रंग दिये।

पूरब में पश्चिम बंगाल,
छत्तीसगढ़ है पश्चिम में,
उत्तर में बिहार बसा है,
और उड़ीसा दक्षिण में।

भेद – भाव कुछ यहाँ नहीं,
सब समान हजरत और ईसा,
भारत का दर्पण जो,
वो राज्य झारखण्ड कहलाये।

कहानियाँ

आदिवासी पकवान

सुहावन मिंज (बी. ए.)
अर्थशास्त्र विभाग

संतोश बेहद खुश हैं वर्शो से इस दिन का उन्होंने इंतजार किया था। वह अपना सामान बांधकर अपने नानी घर लोहरदगा के लिए निकल पड़ा। दिन भर के सफर तय करने के पश्चात् वह आखिरकार उस स्थान पर पहुंचता है जिसके लिए अक्सर वह बेताब रहा करता था।

संतोश अपने माता–पिता का इकलौता संतान है। पिताजी की नौकरी लखनऊ में होने के कारण वह अपनी पढ़ाई लखनऊ में ही कर रहा था। एक बार सरहुल पर्व के अवसर पर उसे अपनी नानी घर झारखंड आने का मौका मिला। वह अक्सर फोन के माध्यम से अपनी नानी से बातें किया करता था और उसकी नानी कहा करती थी – हमारे यहां आ जाया करो, झारखंड के अनोखे पकवान खिलाऊंगी।

संतोश थका – हारा नानी घर पहुंचता है और सीधे नानी से लिपट जाता और कहता है –

नानी, नानी धुस्का कहां है? यह सुनकर सभी ठहाके लगाने लगे। नानी भी हँसते हुए कहने लगी – अरे! हाथ पैर तो धो ले, सीधे आते ही खाने की सोच रहे हो।

क्योंकि संतोश वर्षों बाद नानी घर आया था वह काफी बड़ा और समझदार हो गया है इसलिए आस पास के लोगों का आना–जाना लगा था। लोग उनका हाल–चाल पूछते और संतोश विनम्रता पूर्वक उनका जवाब देते। शाम के 5 बज चुके थे और यह समय था चाय नाश्ता का। शीला मौसी बर्तन पर झारखंड के अनोखे पकवान लेकर आयीं। विभिन्न प्रकार के पकवान थे – धुस्का, पीठा, अरसा रोटी और साथ ही अनेक मिठाइयां भी थी। बगल बैठी नानी ने संतोश से कहा – यह लो तुम्हारा धुस्का, मैंने तुझे कहा था ना कि झारखंड आओगे तो अनोखे पकवान खिलाऊंगी, मैंने अपना कहा पूरा किया।

संतोष बर्तन से मिठाइयाँ उठाने लगा और खाते–खाते कहता है –नानी! हमारे तरफ इस तरह के पकवान क्यों नहीं मिलते? मैंने आज तक नहीं खाया। नानी उसे प्यार से समझाने लगी – यह झारखंड के पकवान है और खासतौर पर झारखंड में ही बनते हैं, यह आदिवासियों के खास पकवान है। धुस्का का नाम लेते ही लोगों के दिमाग में झारखंड का नाम आता है।

सभी लोग चाय के साथ–साथ झारखंडी पकवान का आनंद लेते हैं तभी नानी कहती है – संतोष! अगर अगली बार थोड़ा जल्दी आओगे तो ये सारे पकवान हम साथ–साथ बना सकते हैं और संतोश बीच मे टोकते हुए कहता है –नानी ये धुस्का बनता कैसे हैं? मेरी मम्मी को भी बताऊंगा, ताकि वह भी मेरे लिए लखनऊ में बना सके, ये मुझे बहुत पसंद है।

नानी आराम से जमीन पर बैठते हुए कहती है – बेटा, धुस्का आदिवासियों का बेहतरीन नाश्ता है। इसे बनाना बहुत आसान है। यह चावल, चना या उड़द दाल, बेकिंग सोडा आदि से तैयार होता है। इसे बनाने के लिए चावल और दाल को लगभग 3 घंटे पानी में भिंगोकर रख दिया जाता है। इसके बाद इसे पीसकर बारीक किया जाता है फिर बेकिंग सोडा डाल कर तेल में तालना होता है इस तरह तैयार होता है आपका धुस्का। संतोश नानी की बातों को ध्यान

से सुन रहा होता है। नानी की बात सुनने के बाद संतोश कहता है –नानी मैं पक्का कोशिश करूंगा और लखनऊ में अपने पड़ोसियों को भी खिलाऊंगा। देखना वे भी इसे खाकर दंग रह जाएंगे ।

संतोष के मन में सवाल उठता है कि आदिवासियों के धुस्का जैसे पकवान इतने स्वादिष्ट है तब तो बाकी पकवान कितने अनोखे और स्वादिश्ट होंगे? वह अपनी नानी से पूछता है –नानी! आदिवासियों के बारे कुछ बताइए न।

नानी कहती है – बेटा! आदिवासियों के रहन–सहन खान–पान लाजवाब और अलग होते हैं जो उन्हें बाकियों से अलग करते हैं वे सादगी से परिपूर्ण होते हैं।

रात में सोने से पहले संतोश यही सोचता रहा कि काश! मैं नानी के गांव बार–बार आ पाता। उसे नानी के बने आदिवासी पकवान बहुत पसंद आए।वह मन ही मन सोच रहा था कि वह जब अगली बार आएगा तो एक–दो दिन पहले ही आएगा ताकि वह इस पकवान के बारे और अच्छी तरह जान सके।

सुबह जब वह अपने घर जाने के लिए निकला तो नानी विविध पकवान – धुस्का, पीठा, छिल्का रोटी, अरसा देते हुए कहती है कि वहाँ लखनऊ में अपने दोस्तों और पड़ोसियों को झारखण्ड के पकवान जरूर खिलाना।

जुए की लत

दीपा कुमारी (एम.ए.)
हिन्दी विभाग

एक गांव में चुनू नामक युवक अपने परिवार के साथ रहता था, जहां उसके माता–पिता और एक बहन थी। पिता मजदूरी का काम करते थे जो अक्सर काम के सिलसिले में बाहर रहा करते थे, बीच–बीच में छुट्टियां लेकर घर आते जाते। परिवार में दोनों की शिक्षा चल रही थी। पिता अनपढ़ थे लेकिन अपने बच्चों को शिक्षित करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने जी तोड़ मेहनत की। चुनु दसवीं की परीक्षा उतीर्ण करने के बाद आगे की पढ़ाई छोड़ दी और पिताजी से कहने लगा –पिताजी अब मैं आगे की पढ़ाई नहीं करना चाहता, क्योंकि आप भी बूढ़े होते चले जा रहे।

पिता –लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम आगे की पढ़ाई करो और अपने लिए कुछ अच्छी नौकरी की तलाश करो।

चुनु – नहीं! पिताजी अब मैं कुछ काम करना चाहता हूँ।

पिता – ठीक है, तुम काम करो, क्योंकि अब मुझमें भी काम करने की हिम्मत नहीं रही।

कुछ दिन गुजर गए, चुनु अब घर से बाहर रहने लगा था और अपने पिता से रोज पैसे माँगता था, कहता है–

मेरे दोस्त काम करते है, वो मुझे भी काम दिला देंगे जिसके लिए कुछ पैसे की जरूरत है।

पिता बिना सवाल जवाब किए पैसे देते रहे, उसकी सारी जमा पूँजी खत्म होने के कगार पर थी। एक दिन चुनु के किसी दोस्त से पता चलता है कि उसे जुए की लत लग चुकी है। उन्होंने कुछ

पैसे अवश्य कमाए जिससे उसे झूठा आत्मविश्वास मिला, उसे लगा कि वह आसानी से और पैसे कमा सकता है।

धीरे–धीरे जुआ खेलना चुनु की आदत बन गई। अपने इस आदत को पूरा करने के लिए उसने दोस्तों और रिश्तेदारों से कर्ज लेना शुरू किया। यह बात सबसे पहले चुनु की माँ को पता चली वह फूट – फूट कर रोने लगी और कहती है –

क्या कमी रह गई थी तुम्हारे परवरिश में। अगर ये बात तुम्हारे पिताजी को पता चली तो क्या होगा? तुम्हारे जीवन को सँवारने के लिए वे दिन – रात मेहनत कर रहे है जबकि उनकी उम्र अब आराम करने की है। अब भी समय है – सुधर जाओ।

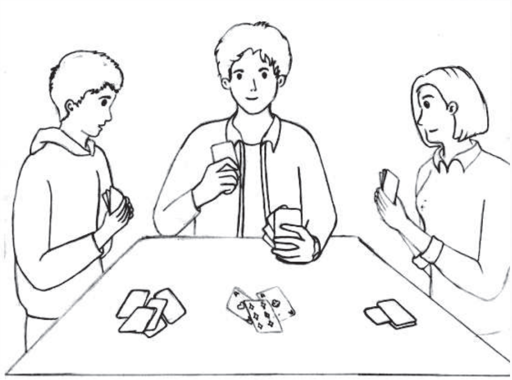

चुनु किसी की बात सुनने को तैयार नहीं उसे लगता है कि वह एक बार में लाखों कमा सकता है। वह बैंको से भी अपने तथा माता – पिता के नाम से ऑनलाइन लॉन ले चुका था।

अब बैंकों से नोटिस आने लगे। माँ से यह बात सहन न हुई और मिट्टी तेल का छिड़काव कर आत्महत्या करने की कोशिश की। सही समय पर बेटी आकर उसकी जान बचायी। दोनो माँ – बेटी खूब आँसू बहाये। पिता मजदूरी कर घर – परिवार को एक – सूत्र में बाँध रखा था घर में प्रायः सभी जरूरतो के सामान उपलब्ध थे। चुनु उसे भी गिरवी रखा। मजबूरन ये बाते पति को बतानी पड़ी। ये बातें सुनकर चुनु के पिताजी की मानों पैरों तले जमीन खिसक गई। परिवार के सभी सदस्य एवं रिश्तेदार चुनु को समझाने की पूरी

कोशिश किए। पिता की सारी मेहनत एक पल में खत्म हो गई। रिश्तेदारों ने भी दुश्मनी मोड़ ली। पिता की बरसों कमाई इज्जत एक – पल में मिट्टी में मिल गई। समाज के लोग उन्हें बुरी नजरों से देखने लगे।

बेटे के गलती की सजा अब माँ – बाप को भुगतनी पड़ रही है। धीरे – धीरे चुनु को अपनी गलती का एहसास होने लगा, लेकिन जल्दबाजी में इतने पैसे चुका नहीं सकते, उन्होंने सभी रिश्तेदारों से वादा किया कि धीरे – धीरे वह कर्ज चुका देगा।

जुआ एक ऐसा नशा है जिसका प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ता है।

घने जंगल की जड़ें

षेखर डुंगडुंग (एम. ए.)
हिन्दी विभाग

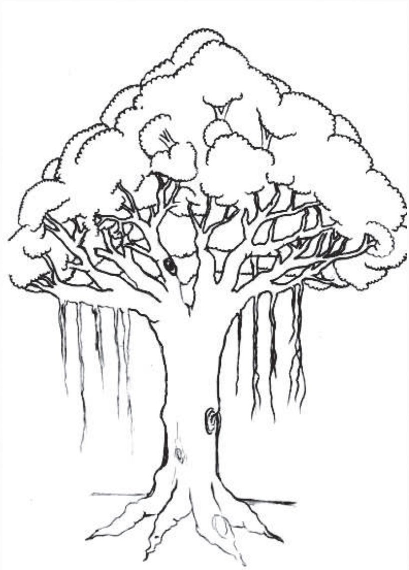

एक हरा – भरा जंगल था, जो दूर नीले आसमान के नीचे पहाड़ों की गोद में फैला हुआ था। उस जंगल में हजारों पेड़ रहा करते थे – बूढ़ा बरगद, साल वृक्ष, पीपल का पेड़, नीम, जामुन, आम, इमली, बाँस। इस तरह अनेक पेड़ उस जंगल में थे, पशु पक्षियाँ गीत गाते थे।

एक दिन अचानक से एक साल का वृक्ष गिरा उस पेड़ की चीख पूरे जंगल में गूंज उठी। दूसरे दिन दो पेड़ काटे गए, तीसरे दिन चार, इस प्रकार यह संख्या बढ़ती गई। जंगल में पेड़ की कटाई शुरू हो गई, पेड़ चीखते चिल्लाते पर उनकी आवाज सिर्फ पत्तियों की सरसराहट थी। जंगल की जड़े डर से कांपने लगी, पक्षी उड़ गए, बंदर चुप हो गए, हवा सुनी हो गई।

उस जंगल के पेड़ को काटते देख बूढ़े बरगद ने बैठक बुलाई और बोला –

"हम इसका विरोध क्यों नहीं कर पा रहे हैं"?

तब एक छोटा – सा पौधा बोला, क्योंकि हम अकेले हैं। हमारी

जड़ें एक दूसरे से नहीं जुड़ी है। बरगद का पेड़ हमें छाया देती, पर आम को लगता है बरगद उसकी रोशनी छीन रही है। नीम का पेड़ दवा के लिए उपयोगी है, पर पीपल को लगता है उसकी पूजा ज्यादा होती है। हम सभी आपस में जुड़े हुए नहीं हैं इसलिए प्रतिदिन कटते जा रहे हैं। उस पौधे की बात सुनकर बूढ़े बरगद के पेड़ ने अपने विशाल जड़ों को जमीन के अंदर गहराई तक फैलाया और साल के वृक्ष के पास ले गया। साल का पेड़ बरगद की जड़ों से जुड़ गया और अपनी जड़ों को नीम से जोड़ दिया। नीम ने पीपल से, पीपल ने आम से, ऐसा करते – करते पूरे जंगल की जड़ें जुड़कर एक विशाल जाल बन गई।

अब कोई भी पेड़ काटने आता, तो उसके सामने हजारों पेड़ अपने जड़ों को एक साथ जोड़कर खड़ी रहतीं। पेड़ कटते लेकिन जड़ें उन्हें दोबारा जीवित कर देती। इस प्रकार जो जंगल सूख रहा था, अब एकजुट होकर हरा – भरा होने लगा। जो पक्षियाँ उड़ गईं थीं वापस आने लगी। जो बंदर चुप हो गए थे जंगल में उछल – कूद करने लगे।

अंत में बूढ़ा बरगद बोला ....

हम कटते इसलिए थे, क्योंकि हम अलग – अलग थे।

अब हम एक हैं।

कुछ दिन बाद जंगल फिर से नीले आसमान और पहाड़ों के बीच हरे रंग में फैल गया।

बाबा मुझे भी ले चलो

अनुपा मिंज (बी. ए.)
हिन्दी विभाग

रिया का कमरा घर के सबसे षांत कोने में था। उसे एकांत पसंद था, लेकिन उसका एकांत वातावरण सिर्फ एक व्यक्ति के कारण अधूरा था, वह थे उसके बाबा।

बाबा का कमरा ठीक उसके सामने था रिया की उम्र सात साल थी, वह अपने बाबा से अक्सर चुप रहा करती थी क्योंकि उसे हमेशा डर लगा रहता था। प्रत्येक सुबह जब बाबा अपने कुर्सी पर बैठकर अखबार पढ़ते – रिया चुपके से बाहर चली जाती।

"नाश्ता लाओ, मुझे देर हो रही है।"

बाबा की आवाज सुनते ही रिया भागकर नाश्ता लाती है।

बाबा जब कभी रिया से कुछ पूछते रिया उसी का सीधा जवाब देती। जब कभी रिया को बाबा से कुछ काम होता वह मम्मी से कहलवा लेती। मम्मी हमेशा रिया और बाबा के बीच मध्यस्थ का काम करती।

दादी कई बार रिया को समझाती –

इतना डरती क्यों हो?

वह तुम्हारे बाबा हैं।

रिया – वे अक्सर चुप रहते हैं दादी।

जब वे चुप रहते तो लगता है जैसे नाराज हैं।

दादी हँसी –

अरे पगली! वे सोचते बहुत हैं।

रिया अच्छे अंकों से परीक्षा उत्तीर्ण करती है इससे बाबा बहुत खुश हुए बाबा के इस खुशी से रिया सोचती है कि अगले बार और अधिक अंक प्राप्त कर बाबा को खुश करेगी।

बाबा की तबीयत कुछ दिनों से खराब चल रही थी। एक षाम रिया अपने भाई – बहनों के साथ खाना खा रही थी तभी अंदर से आवाज आई –

"सुनो तो"

आवाज सुनकर मम्मी भागे – भागे बाबा के पास पहुंचती है। उसकी सांसे तेज हो गई और अचानक थम – सी गई।

मम्मी चीख – चीख कर रोने लगी, रोती माँ को दादी संभाल रही थी। रिया सहम गई उसने धीमी आवाज में पूछा –

"दादी .... बाबा को क्या हुआ"?

दादी मुँह पर हाथ रखे बस रोती रही। माँ ने रिया को गले लगा लिया और धीरे से कहा –

"तुम्हारे बाबा अब हमें छोड़ कर चले गए, बेटी।"

रिया को कुछ समझ नहीं आया।

अगले दिन जब बाबा को सफेद चादर डाल कर बाहर ले जाया जा रहा, तब रिया के अंदर का डर टूट गया।

रिया दौड़ कर उनके पास पहुंची। उनका षरीर ठंडा था और उनका गंभीर चेहरा अब षांत था। रिया कभी पैर के तलवे को मालिश करती तो कभी हाथ। रिया उनके हाथों को छूती है और कांपते हुए रोना षुरू करती है।

बाबा......... उठो! बा.. बा.....मम्मी क्यों नहीं उठ रहे हैं! बाबा आप कहाँ चले गए? आप क्यों..... क्यों चले गए?

रिया बाबा के सीने पर सिर रखती है, जहाँ अब कोई धड़कन नहीं थी उसकी आँखें आँसू से भर गई, वह अपने उन अनकहे षब्दों के लिए तड़पने लगी जो डर के कारण कभी जुबां पर नहीं आए थे।

बाबा आज मैं आपसे पूछने वाली थी कि...."क्या आप मेरे साथ बाजार चलेंगे, बाबा आप मेरी बात सुनिए बाबा।"

कोई जवाब नहीं आया। सिर्फ खामोशी थी, लेकिन अब यह वैसी खामोशी नहीं थी, जिससे डरती थी। यह एक दर्दनाक, खाली खामोशी थी।

रिया ने रोते हुए बाबा का कपड़ा कसकर पकड़ लिया। आप क्यों चले गए? मेरा कसूर क्या था कि मैं आपसे बात नहीं कर पाई? मैं....मैं आपसे डरती थी, पर मैं आपसे प्यार भी करती थी। बाबा एक बार उठ जाइए मैं आपसे बात करना चाहती हूँ प्लीज बाबा।

जब लोग बाबा को ले जाने लगे तो रिया ने चीख कर कहा –

"बाबा! रुक जाओ! बाबा मुझे भी ले चलो! मुझे आपसे बात करना है।"

रिया के अनगिनत आंसू इस बात के प्रमाण थे कि जिस समय बात करने का मौका था, डर की दीवार खड़ी कर दी थी और अब जब वह डर हमेशा के लिए खत्म हो गया, तो बात करने के लिए बाबा ही नहीं रहे।

रिया को जीवन भर यह कसक सताती रही कि उसने अपने बाबा से प्यार और डर के बीच बात क्यों नहीं की। वह यह सोच – सोच कर रोती रही कि अब मेरे अच्छे अंकों पर कौन खुश होगा।

आपके दादा - दादी के घर पर अलौकिक घटनाएँ घटित होने लगती हैं

सुश्मिता खेस (बी. ए.)
भूगोल विभाग

मीना अपने दादा – दादी के साथ रहती है। उनके माता – पिता षहर के एक फैक्ट्री में कर्मचारी हैं। उन्हें परिवार का पेट भरने के लिए षहर की फैक्ट्री में काम करना पड़ता है। मीना अपने दादा हीरा और दादी सुखिया के साथ गाँव में रहती है। मीना 12 साल की लड़की है वह हर रोज जल्दी उठती है और अपने दादी के काम में हाथ बंटाती है फिर तैयार होकर स्कूल जाती है।

रात का भोजन करने के बाद वह अपनी दादी सुखिया को कहानी सुनाने की जिद्द करती है। मीना को कहानी सुनना बहुत पसंद है इसलिए हर रात सोने से पहले कहानी सुनाने की जिद्द करती–

"दादी माँ! दादी माँ! एक कहानी सुनाओ न मुझे नींद नहीं आ रही।"

दादी – हाँ, मेरी बच्ची, तो बताओ मैं तुम्हें कैसी कहानी सुनाऊँ?

मीना – कोई – सा भी कहानी सुना दो।

दादी उसे एक खोई हुई राजकुमारी की कहानी बताती है। घूमते हुए राजकुमारी जंगल में खो जाती है और उस राजकुमारी को एक चुड़ैल कैद कर लेती है। राजकुमारी डर जाती है और चाह कर भी उस चुड़ैल के चंगुल से बच नहीं पाती है।

मीना कहानी सुनते – सुनते नींद के आगोश में चली जाती है।

मीना को देखकर सुखिया भी सो जाती है।

मीना जब सुबह उठकर काम करने लगती है घर पर पानी नहीं होने के कारण पानी लाने जाती है तो गाँव के महिलाओं द्वारा पता चलता है कि गाँव के तालाब में अंधा सोमरा डूबकर मर गया। पूरे गाँव में सोमरा की ही चर्चा है। मीना जल्दी पानी लेकर घर जाती है और अपनी दादी सुखिया को बताती है –

दादी – दादी कहाँ हैं आपलोग? आप – दोनों को एक बात बतानी है।

मीना को अपने दादा – दादी से अत्यधिक लगाव था, साथ ही दादा – दादी को भी मीना से। उन्होंने कभी भी माँ – बाप के बाहर होने का एहसास नहीं होने दिया। वे काम छोड़कर षीघ्र ही अपनी पोती के पास जाते हैं। मीना कहती है –

दादी – दादू गाँव का सोमरा रात को तालाब में डूबकर मर गया। गाँव वाले कह रहे हैं कि अब वह भूत बन गया है और रात को पूरे गाँव में घूमता है।

इसी बीच वहाँ रमा आ जाती है। दादू रमा को खटिया में बैठने का आग्रह करते हैं। रमा और सुखिया आपस में बात करते हैं।

रमा – पोल्टू की बहू मर गई और वह चुड़ैल बन गई। अब वह सफेद साड़ी पहने गाँव वालों को डराती है।

सुखिया – पोल्टू के घर का क्या हाल है?

रमा – पोल्टू और उसका परिवार घर छोड़कर चमेली के घर चले गए, क्योंकि वह चुड़ैल बन कर सबको डरा रही है।

इन सारी बातों से पूरा गाँव भयभीत है। गाँव में एक तांत्रिक

त्रिकाल को बुलाया जाता है। गाँव वाले तांत्रिक से कहते हैं –

भगवान! इस मुसीबत से आप ही हमें बचा सकते हैं।

तांत्रिक – अगर आपलोग इस समस्या से उबरना चाहते हैं तो एक बकरा तथा एक मुर्गे की बलि देनी होगी।

दूसरे दिन मीना जल्दी काम खत्म कर विद्यालय चली जाती है। कक्षा में भी उस अंधा सोमरा के मर जाने की चर्चा है। मीना की सहेली सोनिया है। सोनिया कहती है कि – रात को सोमरा हमारे घर आया था और दरवाजा खटखटा रहा था। किसी ने भी दरवाजा नहीं खोला।

यह सुनकर मीना डर जाती है और कक्षा खत्म होने पर तुरंत घर चली जाती है।

कुछ दिन बाद सिमरिया यानि मीना के गाँव में एक महिला बच्चे को जन्म देते ही मर जाती है, जिसकी चर्चा भी पूरे गाँव में फैली है।

इस तरह गाँव में कई तरह की घटनाएँ हो चुकी हैं, अब पूजा करवाना भी जरूरी हो गया है।

एक दिन तांत्रिक त्रिकाल पूरी तैयारी के साथ गाँव आता है –

"ॐ नमः शिवाय! भूत प्रेत दूर हो जाए।"

गाँव वाले उसके कहे अनुसार एक बड़ा बकरा तथा मुर्गा भेंट स्वरूप देते हैं। त्रिकाल को पता है कि गाँव वाले अंधविश्वासी हैं इसलिए वह उसका भरपूर फायदा उठाता है और "कुछ पूजा मैं अपने गुफा में करूंगा, वरना भूत सबको मार डालेगा।" कहकर वहाँ से चला जाता है।

इन घटनाओं से मीना डर जाती है अब वह विद्यालय जाना भी बंद कर दी। वह अपने दादा – दादी के साथ उनके कामों में हाथ बंटाती है।

एक रोज सुबह मीना अपने दादा – दादी के साथ आंगन में बैठी थी तभी मीना की माँ कमला और पिताजी ष्याम षहर से वापस

घर लौटते हैं। मीना अपने माँ – बाप को देखकर खुश है, जबकि उसके माता – पिता के चेहरे में परेशानी साफ झलक रही थी।

ष्याम कहता है –

हमें साहब ने काम से बाहर निकाल दिया और पैसे भी नहीं दिए, कोई काम न होने के कारण हम वापस घर आ गए।

मीना अपनी माँ से गले लगती है कमला के चेहरे पर भी खुशी के आँसू थे।

चुटकुले

1

एक बार स्कूल में शिक्षक ने छात्रों से पूछा–

"बच्चों! बताओ, बुद्धिमान वही होता है जो हर स्थिति में समाधान निकाल ले। कोई उदाहरण?"

पप्पू तुरंत खड़ा हो गया –

"सर, मेरे पापा!"

शिक्षक बोले – "अच्छा! वो कैसे?"

पप्पू बोला – "सर, घर पर मच्छर बहुत हैं और मम्मी उनसे बहुत परेशान रहती हैं, तो पापा कहते हैं – ''मच्छरों की चिंता छोड़ो, एसी चला दो।''

शिक्षक ने हँसते हुए कहा –

"बेटा, यह समाधान तो है..... लेकिन थोड़ा महँगा!"

पप्पू बोला –

"सर, इसलिए तो मम्मी हमें पापा की 'बुद्धिमानी' से दूर रखती हैं!"

2

मरीज – "डॉक्टर साहब, मुझे सपने में चूहे क्रिकेट खेलते दिखाई देते हैं। क्या करूँ?"

डॉक्टर – "ये लो दवाई, आज से लेना शुरू कर दो।"

मरीज – "डॉक्टर साहब, दवाई तो मैं कल से शुरू करूँगा।"

डॉक्टर – "क्यों? आज क्यों नहीं?"

मरीज – "दरअसल डॉक्टर साहब ...... आज उनका फाइनल मैच है!"

3

दादी ने नया स्मार्टफोन लिया। पोता बोला –

"दादी, इस फोन में आप वीडियो कॉल भी कर सकती हैं।"

दादी हैरान –

"अरे! तो क्या यह फोन इतना चालाक है कि मेरे सामने न होते हुए भी मेरे चेहरे को देख लेगा?"

पोता मुस्कुराया –

"हाँ दादी, और अगर आप नहीं चाहेंगी तो आपके बाल भी नहीं दिखाएगा ...... कैमरा बंद कर देना!"

दादी ने राहत की साँस ली –

"अच्छा है, नहीं तो मोहल्ले की औरतें कहतीं कि 'दादी तो अब कैमरे में भी बिना कंघी के दिख जाती हैं।"